ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-६९
दिनांक- शुक्रवार, १६ सितम्बर, २०२२

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 30.7 एवं 23.6 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 96 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 83 प्रतिशत, हवा की औसत गति 5.4 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 2.6 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 1.4 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 29.0 एवं दोपहर में 33.9 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 25.8 मि0मी0 वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(17–21 सितम्बर, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 17–21 सितम्बर, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- उत्तर प्रदेश का मध्य भाग में कम दबाव के क्षेत्र बनने से उत्तर बिहार के जिलो में अनुकूल मौसमीय परिस्थितियों के चलते अधिकतर जिलों में पूर्वानुमानित अवधि में अच्छी वर्षा की संभावना है। अगले 24–72 घंटो के दौरान तराई तथा मैदानी के भागो के जिलों में अधिकतर स्थानों पर रूक–रूक कर हल्की होने का अनुमान है। तराई के अनेक स्थानों पर तथा मैदानी भागों के 1–2 स्थानों पर मध्यम से थोड़ा अधिक वर्षा हो सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 30 से 31 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 25 से 26 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 12 से 18 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार के साथ अगले दो दिनों तक पूरवा हवा तथा उसके बाद पछिया हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 70 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- अगले २४–७२ घंटों के दौरान अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा, तराई के अनेक स्थानों पर तथा मैदानी भागों के 1–2 स्थानों पर मध्यम से थोड़ा अधिक वर्षा होने की संभावना को देखते हुए किसान भाई इस अवधि में कीटनाशी दवाओं का छिड़काव स्थगित रखें। कीटनाषी दवाओं का छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें। धान, मक्का, खरीफ प्याज, चारा एवं अन्य सब्जियों की फसलों में आवष्यकतानुसार नत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें।
- पिछात धान की फसल जो कल्ले निकलने की अवस्था में 30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें। फसल की इस अवस्था में तना छेदक (स्टेम बोरर) एवं पत्ती लपेटक (लीफ फोल्डर) कीट की निगरानी करें। प्रकोप दिखाई देने पर बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराईड दाने–दार दवा का 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से व्यवहार करें। किसान भाई नेत्रजन उर्वरक के साथ बताई गयी कीटनाषक दानेदार दवा को अच्छी प्रकार से मिलाकर खेतों में समान रुप से व्यवहार करें।
- अगात बोयी गई धान की फसल जो गाभा निकलने की अवस्था में आ गयी हो, उसमें 30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें। धान की फसल जो दुग्धाअवस्था में आ गयी हो उसमें गंधी बग कीट की नियमित रुप से निगरानी करें। इस कीट के शिषु एवं पौढ़ दोनों जब पौधों में बाली निकलती है तो यह बालियों का रस चुसना प्रारंभ कर देती हैं जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है। धान की दुग्धावस्था में यह पौधों को अधिक क्षति पहुचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है। इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक–एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते है।
- विगत माह रोपी गई फूलगोभी में आवष्यकतानुसार निकौनी करे एवं फसल में पत्ती खाने वाली कीट (डायमंड बैक मॉथ) की निगराणी करे। इस कीट के पिल्लू फूलगोभी की मध्यवाली पत्तियों तथा सिरवाले भाग को अधिक क्षति पहुँचाती हैं। शुरुआती अवस्था में यह पिल्लू पत्तियों की निचली सतह में सुरंग बनाकर एवं उसके अन्दर पत्तियो को खाता है। इस कीट से वचाव हेतु स्पेनोसेड 48 इ0सी0 दवा एक मि0ली0 प्रति 4 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें।
- बैगन की तैयार पौध की रोपाई करें। रोपनी से पहले 1 ग्राम फ्युराडान 3 जी0 दानेदार दवा प्रति पौधा की दर से जड़ के पास मिट्टी में मिला कर रोपनी करें। अगात रोपी गई बैगन की फसल में तना एवं फल छेदक कीट की निगरानी करें। इस कीट का आक्रमण होने पर कीट से ग्रसित तना एवं फल की तुराई कर मिट्टी में गाड़ दें। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो स्पिनोसेड 48 ई0सी0/1 मि0ली0 प्रति 4 लीटर पानी या क्वीनालफॉस 25 ई0सी0 दवा का 1.5 मि0मी0 प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करे।
- भिंडी और उरद् की फसल में पीला मोजैक वायरस रोग की निगरानी करें। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। इसमें पौधे की षिराए पीली होकर मोटी हो जाती है और बाद में पत्तियॉ भी पीली परने लगती है। बीमारी की उग्र अवस्था में तने एवं फलों का रंग भी पीला पर जाता है। रोगग्रस्त पौधा एवं फलियाँ छोटे रह जाते है। रोगग्रस्त पौधों को उखार कर नष्ट कर दें। रोग के विस्तार से बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड एक मी0ली0 प्रति 3 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें।
- फूलगोभी की मध्यकालीन किस्में जैसे– पूसा अगहनी, पूसी, पटना मेन, पूसा सिन्थेटिक–1, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेधना, काषी कुवाँरी एवं अर्ली स्नोवॉल की रोपाई करे। अगात फुल गोभी में पत्ती खाने वाली कीट (डायमंड बैक मॉथ) की निगराणी करे। पत्तागोभी की अगात किस्मों की बुआई नर्सरी में करें। इसके लिए प्राइड ऑफ इण्डिया, गोल्डेन एकर, पूसा मुक्ता, पुसा अगेती एवं अर्ली ड्रम हेड किस्में अनुषंसित है। नर्सरी से खरपतवार समय–समय पर निकालते रहें ताकि स्वस्थ पौध मिल सकें।

आज का अधिकतम तापमानः 31.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.1 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 23.4 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.2 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम विज्ञान)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी